3. करण → कर्ता जिस साधन या माध्यम से कार्य करता है, उसे करण कारक कहते हैं।
जैसे – रमेश गेंद से खेलता है।

4. सम्प्रदान → कर्ता जिसके लिए कार्य करता है, या जिसे कुछ देता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं।
जैसे – माँ ने बच्चे को खाना दिया।

5. अपादान → जिस शब्द से अलग होने का, भय का, लज्जा का तथा तुलना का भाव प्रकट होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। जैसे – माया राम से लम्बी है।

6. संबंध → जिस शब्द से किसी व्यक्ति या वस्तु का दूसरे से सम्बन्ध प्रकट हो, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं। जैसे – यह मेरा विद्यालय है। यह रवि की पुस्तक है।

7. अधिकरण → संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के आधार, समय और स्थान आदि का पता चलता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे – वृक्ष पर चिड़िया बैठी है।

8. सम्बोधन → शब्द के जिस रूप से किसी को बुलाने या पुकारने के भाव का आभास हो, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। जैसे – बच्चो! सदा सच बोलो।

20 अप्रैल, 2020 सोमवार पाठ - 7. कारक लिखो व याद करो। 5

प्र०1. कारक किसे कहते हैं?
उ० - संज्ञा और सर्वनाम शब्दों का क्रिया के साथ संबंध प्रकट करने वाले शब्दों को कारक कहते हैं।
प्र०2. कारक के कितने भेद हैं? विभक्ति सहित बताइए।
उ० - कारक आठ प्रकार के होते हैं।

	कारक	विभक्ति चिह्न
1.	कर्ता	ने
2.	कर्म	को
3.	करण	से/के द्वारा
4.	सम्प्रदान	को/के लिए
5.	अपादान	से (अलग होना, भय, लज्जा, तुलना)
6.	सम्बन्ध	का, के, की
7.	अधिकरण	में/पर
8.	सम्बोधन	रे!, हे!, अरे!, ओ!

प्र०3. परसर्ग किसे कहते हैं?
उ० - जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध क्रिया के साथ प्रकट होता है, वे परसर्ग कहलाते हैं। इन्हें ही विभक्ति चिह्न कहते हैं।
प्र०4. कारक के भेदों को परिभाषा सहित लिखो।
उ० - 1. कर्ता → क्रिया के जिस रूप से कार्य करने वाले का ज्ञान होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं।
जैसे - माली ने पौधा लगाया।
2. कर्म → वाक्य में जिस संज्ञा शब्द पर क्रिया का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।
जैसे - पत्र को पढ़ लो।

Date :
Page No. :

पाठ- 5

उपसर्ग – जो शब्दांश मूल शब्द के प्रारंभ में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं। जैसे- सु + पुत्र = सुपुत्र, बे + ईमान = बेईमान आदि।

हिंदी में तीन प्रकार के उपसर्ग हैं -(क) तत्सम (संस्कृत) उपसर्ग (ख) तद्भव (हिन्दी) उपसर्ग (ग) आगत उपसर्ग।

ध्यान रहे उपसर्गों का स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं होता।

(क) तत्सम (संस्कृत) उपसर्ग

अधि – अधिग्रहण, अधिवक्ता, अध्यक्ष

अनु - अनुचर, अनुभव, अनुशासन

अप - अपयश, अपमान, अपशब्द

आ - आजीवन, आमरण, आनंद

(ख) तद्भव (हिन्दी) उपसर्ग

अ – अजान, अमोल, अचेत

अन - अनपढ़, अनहोनी

उन - उनतीस, उनसठ

नि - निकम्मा, निडर, निठल्ला

(ग) आगत उपसर्ग

कम - कमजोर, कमअक्ल, कमउम्र

बद - बदनाम, बदहाल, बदचलन

ला - लाइलाज, लाजवाब, लापता

हर - हररोज़, हरतरफ, हरउम्र

Date :
Page No. :

, 2020 दिन - सोमवार

पाठ - 5

प्रत्यय - जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में लगकर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। जैसे - बंगाल + ई = बंगाली, सुंदर + ता = सुंदरता आदि
प्रत्यय के दो प्रकार होते हैं —

(1) कृत् प्रत्यय :- जो प्रत्यय धातु (क्रिया) के मूल रूप में जुड़कर संज्ञा, विशेषण आदि शब्द बनाते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं।
आई = लड़ + आई = लड़ाई
आन - उड़ + आन - उड़ान
आक - तैर + आक - तैराक
आप - मिल + आप - मिलाप
आव - चुन + आव - चुनाव
आवट - सज + आवट - सजावट
नी - शैर + नी - शैरनी

(2) तद्धित प्रत्यय :- संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों के पीछे लगकर जो प्रत्यय शब्द बनाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।
आर - लोहा + आर = लुहार
इया - डिब्बा + इया = डिबिया
ई - घंटा + ई - घंटी
एरा - साँप + एरा - संपेरा
ता - मानव + ता = मानवता
दार - दुकान + दार - दुकानदार
पन - लड़का + पन - लड़कपन
वान - गाड़ी + वान - गाड़ीवान